सच्चाई के दम पर जोश के साथ...

RNI No: UPHIN/2023/86769

www.swarajindianews.com

swarajindia2023@gmail.com swarajindianews swarajindianews

मूल्यः ₹ 02

स्वराज इंडिया

सांध्यकालीन समाचार पत्र

कानपुर, गुरुवार, 15 मई, 2025
वर्षः 02, अंकः 138, पृष्ठः 8+4

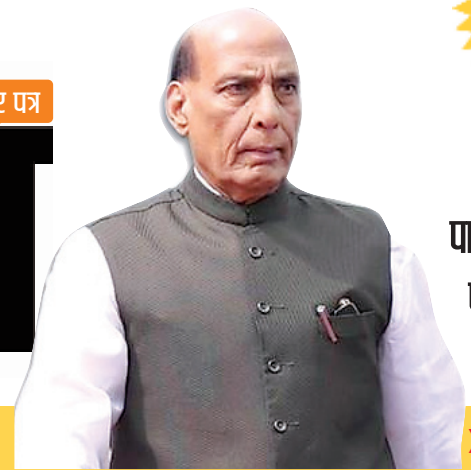

पाकिस्तान पर किया कटाक्ष

इनसाइड कानपुर में डेंटिस्ट कर रही थी हेयर ट्रांसप्लांट... » Pg04

» Pg12

योगी सरकार का बड़ा फैसला,यूपी के 17 शहरों में लागू हुआ नियम

घर के बाहर गाड़ी खड़ी करने वालों को देना होगा शुल्क

लखनऊ। यूपी में अब घर के बाहर गाड़ी खड़ी करने वालों को भी पार्किंग शुल्क देना होगा। इसके लिए शासनादेश जारी कर दिया गया है। पहले चरण में 17 जिलों के लिए यह आदेश जारी हुआ है।

जिनके घरों में चार पाहिया गाड़ी खड़ी करने की सुविधा नहीं है, उन लोगों को सड़कों पर रात में गाड़ी खड़ी करने के एवज में पार्किंग शुल्क देना होगा। नगर निगम रात्रि पार्किंग के लिए कुछ स्थान भी आरक्षित करेंगे। प्रमुख सचिव नगर विकास अमृत अभिजात ने फिलहाल 17 शहरों के लिए उत्तर प्रदेश नगर निगम (पार्किंग स्थान का सन्निर्माण, अनुरक्षण और प्रचालन) नियमावली-2025 की अधिसूचना जारी हो चुकी है। इसके साथ ही शहरों में जाम की समस्या को देखते हुए त्योहारों व मेलों के मौके पर फ्लाई ओवर के नीचे पार्किंग की वैकल्पिक सुविधा दी गई है। हरियाली वाले स्थानों पर पार्किंग का ठेका नहीं दिया जाएगा।

अधिसूचना के मुताबिक पहले चरण में लखनऊ, कानपुर, आयोध्या, अलीगढ़, आगरा, गाजियाबाद, गोरखपुर, झांसी, प्रयागराज, फिरोजाबाद, बरेली, मथुरा, मेरठ, मुरादाबाद, वाराणसी, शाहजहांपुर व सहारनपुर के लिए यह सुविधा होगी।

नगर निगमों में नगर आयुक्त की अध्यक्षता में 12 सदस्यीय कमेटी होगी। सहायक अभियंता को इसका सदस्य सचिव बनाया जाएगा। कमेटी 90 दिनों में पाकिंज़ग स्थलों की सूची जारी करेगी। पीपीपी मॉडल पर भी पाकिंज़ग की सुविधा विकसित करने के लिए लाइसेंस दिया जाएगा।

सार्वजनिक स्थलों पर पार्किंग की व्यवस्था होगी

सिटी बसों और मेट्रो रेल पर चलने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जाएगा। रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन, कार्यालय, स्कूल, डिग्री कॉलेज, छात्रावासों, फैक्ट्रियों, अस्पतालों, व्यवसायिक भवनों के पास लोगों की सुविधाओं के लिए पार्किंग की व्यवस्था की जाएगी। गलियों और मिश्रित भू-उपयोग वाले स्थानों पर भी पहली बार पार्किंग ठेका देने की व्यवस्था की गई है।

खुले स्थान पर पार्किंग ठेका दिया जाएगा

खुले स्थान पर भी पार्किंग का ठेका दिया जाएगा। इसमें मैदान, सड़क के किनारे चौड़े फुटपाथ वाले स्थानों पर पार्किंग की व्यवस्था होगी। कोई भी घर के बाहर या फिर खाली जमीन पर पार्किंग नहीं चला पाएगा। उसे ऐसी पार्किंग चलाने के लिए लाइसेंस लेना होगा। पाकों के नीचे भूमिगत पार्किंग की अनुमति इस शर्त के साथ दी जाएगी कि इसके ऊपर 95 प्रतिशत भाग पर हरियाली होनी चाहिए।

पार्किंग की नई दरें हुई तय

10 लाख से अधिक आबादी वाले शहरों में

- दो घंटे के लिए दो पहिया 15 रु., चार पहिया 30 रु.
- एक घंटे के लिए दो पहिया 7 रु. चार पहिया 15 रु.
- 24 घंटे के लिए दो पहिया 57 रु. चार पहिया 120 रु.
- मासिक पास दो पहिया 855 रु. चार पहिया 1800 रु.

10 लाख से कम आबादी वाले शहरों में

- दो घंटे के लिए दो पहिया 10 रु., चार पहिया 20 रु.
- एक घंटे के लिए दो पहिया 5 रु. चार पहिया 10 रु.
- 24 घंटे के लिए दो पहिया 40 रु. चार पहिया 80 रु.
- मासिक पास दो पहिया 600 रु. चार पहिया 1200 रु.

ये सुविधाएं भी

- मोबाइल एप पर पार्किंग की जानकारी मिलेगी
- ऑनलाइन पार्किंग शुल्क भुगतान सुविधा मिलेगी
- सभी नए व पुराने पार्किंग स्थलों पर ई-चार्जिंज़ग की सुविधाएं होंगी
- फास्टैग से भी भुगतान की सुविधा शुरू की जाएगी
- बिना अनुमति पार्किंग चलाने वालों को जुर्माना देना होगा
- कमेटी को पीक आवर्स के हिसाब से दर तय करने का अधिकार होगा
- निशक्तों के लिए पार्किंग में अलग से स्थान आरक्षित होगा।

पहलगाम के बाद 14 आतंकियों की बनी थी हिट लिस्ट

छह आतंकी ढेर अब आठ की तलाश

» ऑपरेशन सिंदूर से पाकिस्तान में आतंक की कमर तोड़कर रख दी

» जम्मू-कश्मीर में हमारे सुरक्षाबल लगातार आतंकियों को ढेर कर रहे

14 आतंकियों की लिस्ट में आतंकी नंबर 9, आतंकी नंबर 3, आतंकी नंबर 11, आतंकी नंबर 5, आतंकी नंबर 6 और आतंकी नंबर 2 को मार गिराया गया है। ये सभी आतंकी बीते दो दिनों में शोपियां और पुलवामा एनकाउंटर में मारे गए हैं।

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत के ऑपरेशन सिंदूर से पाकिस्तान में आतंक की कमर तोड़कर रख दी गई है। इस बीच सेना ने आतंकियों की हिट लिस्ट जारी की थी, जिसमें से छह को ढेर किया जा चुका है। लश्कर के आतंकियों के बाद आज त्राल में जैश-ए-मोहम्मद के आतंकियों को मार गिराया गया है, सेना ने 14 आतंकियों की जो हिटलिस्ट तैयार की थी, उसमें से छह आतंकियों को ढेर कर दिया गया है। ये स्थानीय आतंकी एक तरह से पाकिस्तानी दहशतगतोज़ के मजबूत मददगार हैं, जो उन्हें स्थानीय स्तर पर सपोटज़ और लॉजिस्टिक सहायता देते हैं। साथ ही आतंकियों को पनाह और संसाधन भी मुहैया कराते हैं।

इन 14 आतंकियों की लिस्ट में आतंकी नंबर 9, आतंकी नंबर 3, आतंकी नंबर 11, आतंकी नंबर 5, आतंकी नंबर 6 और आतंकी नंबर 2 को मार गिराया गया है। ये सभी आतंकी बीते दो दिनों में शोपियां और पुलवामा एनकाउंटर में मारे गए हैं। शोपियां में ढेर किए गए आतंकियों के नाम शाहिद कुट्टे, अदनान शाफी, अहसान उल हक शेख हैं जबकि पुलवामा एनकाउंटर में मारे गए आतंकियों के नाम आमिर नजीर वानी, यावर अहसान बट्ट और आसिफ अहमद शेख हैं।

पड़ोसी देश परेशान

भारत की सख्ती के बाद घुटनों पर आया पाकिस्तान, जताई वार्ता की इच्छा

बूंद-बूंद के लिए तरस रहा पाकिस्तान, पाकिस्तान ने भारत से लगाई गुहार

बूंद-बूंद के लिए तरस रहे पाकिस्तान ने सिंधु जल संधि को लेकर भारत से वार्ता की गुहार लगाई है। इस बाबत पाकिस्तान के जल संसाधन सचिव सैयद अली मुर्तजा ने अपनी भारतीय समकक्ष देवश्री मुखर्जी को पत्र लिखा है। पहलगाम में आतंकी हमले और उसके बाद भारत के लिए गए एक्शन से पाकिस्तान घुटनों पर आ गया है। ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने जहां पाकिस्तान को सैन्य मोर्चे पर तबाह कर दिया वहीं, उससे पहले सिंधु जल समझौते को स्थगित करने के फैसले से पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसा दिया है। वहीं, अब सूत्रों ने बताया है कि पानी के लिए तरस रहे पाकिस्तान ने इस संधि को लेकर भारत से वार्ता करने की इच्छा जाहिर की है। सूत्रों ने बताया कि पाकिस्तान के जल संसाधन सचिव सैयद अली मुर्तजा ने संधि के निलंबन पर भारत सरकार की औपचारिक अधिसूचना पर प्रतिक्रिया दी है। इसे लेकर उन्होंने अपनी भारतीय समकक्ष देवश्री मुखर्जी को एक पत्र लिखा है। इसमें मुर्तजा ने भारत द्वारा जताई गई आपत्तियों पर चर्चा करने के लिए हामी भरी। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार तत्परता से इस मुद्दे पर वार्ता करना चाहती है। इस पत्र में मुर्तजा ने कहा है कि सिंधु जल संधि से मिलने वाले जल पर लाखों लोगों की निर्भरता है, ऐसे में भारत को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करना चाहिए। हालांकि उन्होंने अपने पुराने बयान का भी जिक्र किया कि भारत इस संधि को लेकर एकतरफा रूप से कोई निर्णय नहीं ले सकता। वहीं, दूसरी ओर जल शक्ति मंत्रालय के अधिकारियों ने इस घटनाक्रम पर आधिकारिक रूप से फिलहाल कोई भी बयान देने से मना कर दिया। गौरतलब है कि सिंधु जल संधि पर चर्चा के लिए पाकिस्तान की ये पेशकश उसकी छटपटाहट को साफदिखा रही है।

संघर्ष विराम के बाद भी समझौते पर स्थगन जारी

भारत-पाकिस्तान के बीच चार दिन तक चले संघर्ष के बाद बीती 10 तारीख को इस पर विराम लग गया था। पाकिस्तान की ओर से घुटने टेके जाने के बाद भारत ने 10 तारीख को शाम पांच बजे से संघर्ष विराम का एलान किया। तब विदेश मंत्रालय ने बताया था कि संघर्ष विराम के लिए भारत अपनी शर्तों पर तैयार हुआ है। संघर्ष विराम के बीच सिंधु जल संधि का निलंबन जारी रहेगा। सिंधु जल समझौता, 1960 में भारत और पाकिस्तान के बीच हस्ताक्षरित एक जल-बंटवारा समझौता है। इसमें विश्व बैंक ने मध्यस्थता की थी।

शोषण

कोर्ट की दलील–विवाहेतर संबंध सेवा नियमों का उल्लंघन नहीं

पूर्व एसीपी मोहसिन को हाई कोर्ट से बड़ी राहत

» हाईकोर्ट ने एसीपी के निलंबन पर लगाई रोक

प्रमुख संवाददाता स्वराज इंडिया

कानपुर। पूर्व एसीपी मोहम्मद मोहसिन को यौन उत्पीड़न के गंभीर आरोपों के बाद निलंबित किए जाने के मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच से बड़ी राहत मिली है। कोर्ट ने उनके निलंबन पर फिलहाल रोक लगाते हुए राज्य सरकार को चार सप्ताह में अपना पक्ष रखने का निर्देश दिया है। मोहसिन की ओर से अधिवक्ता एलपी मिश्रा ने अदालत में दलील दी कि विवाहेतर संबंध को यूपी सरकारी सेवक आचरण नियमावली, 1956 के तहत तब तक कदाचार नहीं माना जा सकता जब तक वह कानूनी रूप से विवाह में परिवर्तित न हो।

उनका कहना था कि शादीशुदा होते हुए भी किसी अन्य महिला से निजी संबंध बनाना अनुशासनात्मक कार्रवाई का आधार नहीं हो सकता, जब तक उससे सेवा में प्रत्यक्ष प्रभाव न पड़े। हाईकोर्ट ने इन दलीलों को संज्ञान में लेते हुए मोहसिन के निलंबन आदेश पर अंतरिम रोक लगा दी है। अब मामले की अगली सुनवाई 28 जुलाई को निर्धारित की गई है।

पीड़िता की लड़ाई जारी- एससी/एसटी आयोग और डीजीपी से की शिकायत

आईआईटी कानपुर की पीएचडी छात्रा द्वारा दर्ज कराई गई एफआईआर में पूर्व एसीपी मोहसिन पर गंभीर आरोप लगाए गए हैं। छात्रा का आरोप है कि मोहसिन ने शादी का झांसा देकर उसका यौन शोषण किया और जब उसने विरोध किया तो उसे धमकाया गया। यह मामला 12 दिसंबर 2024 को कल्याणपुर थाने में दर्ज

हुआ था। इसके बाद पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार ने मोहसिन को कानपुर से हटाकर लखनऊ मुख्यालय से अटैच कर दिया था और बाद में रिपोर्ट के आधार पर निलंबित कर दिया गया था। पीड़िता ने डीजीपी को ई–मेल भेजकर न्याय की गुहार लगाई है, साथ ही एससी/एसटी आयोग में भी शिकायत दर्ज की है। पीड़िता का कहना है कि वह जल्द ही आयोग के अधिकारियों से मिलकर इस मामले में ठोस कार्रवाई की मांग करेगी। उसका आरोप है कि मोहसिन के खिलाफ कानूनी कार्रवाई को दबाने की कोशिश हो रही है।

चिड़ियाघर में शेर पटौदी की मौत

दो दिन से नहीं खा रहा था खाना, अन्य वन्यजीवों के स्वास्थ्य की निगरानी

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। चिड़ियाघर में गोरखपुर से लाए गए बब्बर शेर की मौत हो गई है। उसकी हालत गंभीर चल रहा थी। उसने दो दिनों से खाना छोड़ दिया था और सिर्फ पानी पी रहा था।

गोरखपुर से कानपुर चिड़ियाघर लाए गए शेर पटौदी की मौत हो गई है, जिसकी कई दिनों से हालत गंभीर बनी हुई थी। उसने दो दिन से खाना नहीं खाया था, सिर्फ पानी पी रहा था। वन्यजीव चिकित्सक ड्रिप के माध्यम से उसको दवा पिला रहे थे।

बुधवार को पशुपालन विभाग के डॉक्टरों की टीम भी शेर की जांच करने पहुंची थी। शेर को क्वारंटीन किया गया था। भोपाल भेजी गई शेर के सैंपल की जांच रिपोर्ट आज आ सकती है। बता दें कि बर्ड फ्लू के संक्रमण के खतरे को देखते हुए चिड़ियाघर के अन्य वन्यजीवों पर भी खतरा मंडरा रहा है।

चिड़ियाघर को लगातार सैनेटाइज किया जा रहा है। गोरखपुर के चिड़ियाघर में मृतक बाघिन (शक्ति) में बर्ड फ्लू की पुष्टि होने के बाद शेर पटौदी की दवाओं की डोज बढ़ा दी गई थी। हालांकि, बरेली लैब के डॉक्टरों ने शेर में भी संक्रमण होने की आशंका जताई थी। डॉ. नासिर की अगुवाई में चार लोग शेर का इलाज कर रहे थे।

अन्य वन्यजीवों के व्यवहार व स्वास्थ्य की निगरानी

रविवार को जब बब्बर शेर चिड़ियाघर लाया गया था, तब उसने एक किलो चिकन खाया था। मंगलवार से उसने खाना बिलकुल बंद कर दिया है।

रेंजर नावेद इकराम ने बताया कि अन्य वन्यजीवों के व्यवहार व स्वास्थ्य की निगरानी की जा रही है। सभी स्वस्थ है। बिना पीपीई किट पहने वन्यजीवों के बाड़ों में प्रवेश न करने के निर्देश हैं।

सभासद ने बाबू से की हाथापाई, बोला 'चीर दूंगा'

- बिल्हौर नगर पालिका सदन में बजट की बैठक में भारी हंगामा, बवाल
- बवाल बढ़ता देख ईओ ने बुलाई पुलिस
- सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा बवाल का वीडियो

स्वराज इंडिया संवाददाता

बिल्हौर (कानपुर)। बिल्हौर नगर पालिका सदन में बुधवार को सदन की मर्यादा तार-तार हो गई। सदन की कार्रवाई के बीच हाथापाई हो गई। बातों-बातों में एक सभासद ने काउंटर पर चढ़कर बाबू के बोतल मार दी। जिससे अफरातफरी की स्थिति उत्पन्न हो गई। यह घटना कैमरे में भी कैद हो गई। और शाम होते ही सोशल मीडिया की सुर्खियों में आ गई है। सभासद ने चेयरमैन के साथ भी बदसलुकी की और कहा, दोनों को मारूंगा, यहीं मारूंगा चीर देंगे। इतना कहने पर बाकी सभासद उग्र हो गए। और अध्यक्ष और बाबू के समर्थन में आकर कहने लगे आओ अब मारो आकर। इसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुआ। हालांकि आपका अपना स्वराज इंडिया अखबार इस वायरल वीडियो की पुष्टि नहीं करता है। बवाल कोई बड़ा रूप ले पाता। इससे पहले ईओ अंजनी मिश्रा ने मौके की स्थिति को भांप लिया और पुलिस को सूचना कर दी।

सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने मामले को शांत कराया। घटना के चलते सदन की कार्रवाई थोड़ी देर के लिए प्रभावित भी हुई। लेकिन हंगामे के बीच बजट वर्ष 2025-26 का सर्वसम्मति से 19.19 करोड़ का बजट पास हो गया। कैमरे में कैद नगर पालिका की शायद यह पहली घटना होगी। जिसमें भाजपा सभासद अपनी मर्यादा भूल गए। इस पूरे घटना की नगर पालिका ईओ अंजनी मिश्रा ने कड़ी निंदा की है। अध्यक्ष इकलाख खान ने कहा हमें लड़ाई नहीं लड़नी। हम हर बात का जवाब काम से देंगे। वीडियो वायरल हुआ है उसमे देख सकते हैं, कौन सही है और कौन गलत है। पालिका के नामित अधिवक्ता राजकुमार का कहना है कि इस तरह की घटना नहीं होनी चाहिए थी। मामले में इंस्पेक्टर बिल्हौर से सम्पर्क करने की कोशिश की गई तो बात नहीं हो सकी। क़स्बा इंचार्ज सचिन सिरोही ने बताया कि अभी तक किसी भी पक्ष की तरफ से प्रार्थना पत्र नहीं आया है। शिकायत आने पर कार्रवाई की जाएगी।

अध्यक्ष व सभासदों से घटना की जानकारी लेते क़स्बा चौकी प्रभारी सचिन सिरोही

काउंटर पर चढ़कर बाबू जीतेन्द्र को पानी की बोतल मारते सभासद अतुल

बजट की मीटिंग में कॉपी लेट आई- सभासद अतुल

बिल्हौर। मीडिया से रूबरू होते हुए सभासद अतुल ने कहा कि बजट की मीटिंग में कॉपी बहुत लेट आई। कॉपी दी गई तो उस बजट की कॉपी पर हमने आपत्ति जताई। और बजट से संबंधित जानकारी लेते हुए सवाल किये। तो बाबू से जानकारी नहीं मिली।अध्यक्ष भी बाबू की हाँ में हाँ मिलाते रहे। बाबू अभद्रता करने लगे। जिस पर विवाद आगे बढ़ गया। भ्रष्टाचार की हमारी लड़ाई जारी रहेगी।

नगर पालिका के बाबू की भूमिका पर भी कई सवाल ?

बिल्हौर। नगरपालिका की नीति के तहत सामान्य स्थितियों में यहां पर कार्यरत बाबुओं का तबादला दूसरी जगह नहीं होता है। बिल्हौर नगरपालिका में तीन तीन दशकों से कई बाबू जमे हुए हैं। लंबे समय से एक ही स्थान पर तैनाती होने के कारण विवाद से चर्चा में आए बाबू जितेंद्र सिंह की कार्य प्रणाली भी सवालों के घेरे में आ गई है। वह भले ही खुद का दामन साफ बता रहे हों लेकिन सच्चाई किसी दूसरी ओर इशारा कर रही है। अब देखना यह है अधिकारी इस मामले में कोई ठोस कदम उठाते हैं या इसे भी पुराने मामलों की तरह ठंडे बस्ते में डाल देते है।

बैठक चल रही थी सभासद व्यक्तिगत हो गए-बाबू जीतेन्द्र सिंह

बिल्हौर। सदन में बैठक चल रही थी। सभासद ने दो बिंदुओ पर जानकारी मांगी। इस पर हमारे द्वारा कहा गया कि दोनों बिंदु नोट कर लिए हैं। ईओ व अध्यक्ष जी के निर्देशानुसार जानकारी से अवगत कराया जाएगा। इस पर सभासद ने आक्रोश में आकर गाली गलौज करते हुए मेरे बोतल फेंककर मारी और अध्यक्ष जी से बदसलूकी की।

बिजली कटौती से जूझ रही लाखों की आबादी

स्वराज इंडिया संवाददाता

कानपुर। बिजली विभाग की बड़ी लापरवाही के कारण कल्याणपुर के कई क्षेत्रों में 2 दिन से बिजली नहीं आ रही है। कल रात में जब बारा सिरोही सब स्टेशन के अधिकारियों से बात हुई तो उन्होंने कहा कि रात में 2 घंटे में बिजली आ जाएगी। स्टाफ की कमी होने के कारण फाल्ट में सुधार नहीं हो पा रहा है लेकिन रात भर लाइट अप डाउन करती रही। जब सुबह सब स्टेशन पर एक्सियन से बात हुई तो बोले कि आज दो-तीन घंटे

कल्याणपुर के कई क्षेत्रों में 2 दिन से बिजली नहीं आ रही, बिजली अफसरों का घेराव होगा

के अंदर पूरे कल्याणपुर 12 सिरोही सब स्टेशन के फाल्ट सही हो जाएंगे। वहीं स्थानीय लोगों ने बताया कि लाइट सही नहीं हुई तो बारासिरोही सब स्टेशन का घेराव करेंगे ।जिसमें मुख्य रूप से कल्याणपुर युवा उद्योग व्यापार मंडल के अध्यक्ष राजेश चंदेल, अनुज राजावत,देवेश सेंगर ,गौरव प्रजापति आदि लोग उपस्थित रहे।

बिजली कटौती को लेकर बहस करते स्थानीय नागरिक

कानपुर में डेंटिस्ट कर रही थी हेयर ट्रांसप्लांट

» दो इंजीनियर युवकों की मौत के बाद मचा हड़कंप

» कम पैसे में इलाज का लालच देकर फंसते थे बालों की प्रॉब्लम वाले युवक

प्रमुख संवाददाता स्वराज इंडिया

कानपुर। रावतपुर में हेयर ट्रांसप्लांट के बाद मौत का दूसरा मामला सामने आने के बाद हड़कंप मचा हुआ है। जिसमें फर्रुखाबाद के एक 32 वर्षीय युवक की जान चली गई। पीड़ित परिवार ने क्लिनिक की डॉक्टर अनुष्का तिवारी पर लापरवाही का आरोप लगाया है, जिसके बाद पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक, डॉ अनुष्का ने फरीदाबाद की यूनिवर्सिटी से बीडीएस किया है। उनके पति सौरभ ने कानपुर के निजी मेडिकल कॉलेज से बीडीएस किया है। दूसरे मामले में भी एफआईआर दर्ज होगी। एसीपी अभिषेक पांडेय ने बताया कि मामले की जांच जारी है। आरोपी डॉक्टर की गिरफ्तारी के प्रयास जारी हैं।

FOLLOW UP

केस 1–आरोप है कि रावतपुर थानाक्षेत्र के वाराही क्लिनिक में मार्च में हेयर ट्रांसप्लांट के दौरान बिजली विभाग के इंजिनियर विनीत दूबे बीमार हो गए थे। उनके चेहरे पर काफी सूजन आ गई थी। एक अस्पताल इलाज के दौरान 15 मार्च को विनीत की मौत हो गई थी। कुछ दिन पहले पुलिस ने आरोपित डॉ. अनुष्का तिवारी पर एफआईआर लिखी थी। अनुष्का क्लिनिक बंद कर भाग गईं और उनका फोन भी बंद है।

केस 2– बुधवार को ऐसा ही एक और मामला सामने आया। फर्रुखाबाद की प्रमोदिनी कटियार ने बताया कि उनका बेटा मयंक (32) कानपुर से बीटेक करने के बाद जॉब कर रहा था। आरोप है कि 18 नवंबर 2024 को मयंक हेयर ट्रांसप्लांट कराने वाराही क्लिनिक डॉ. अनुष्का तिवारी के पास पहुंचा। 18 नवंबर को मयंक सुबह 8 बजे क्लिनिक पर गया और दोपहर 2 बजे वापस आया। शाम 5 बजे मयंक को उसका छोटा भाई फर्रुखाबाद ले आया। आधी रात से ही मयंक को दर्द उठने लगा।

हेयर ट्रांसप्लांट करने वाली डॉक्टर अनुष्का तिवारी

ट्रांसप्लांट के बाद बिगड़ने लगी थी हालात

फोन पर डॉ. अनुष्का ने कभी इंजेक्शन लगवाने तो कभी पट्टी ढीली करने की बात कही। ऐसा करने के बाद भी दर्द ठीक नहीं हुआ।

रात भर में चेहरे पर काफी सूजन बढ़ गई। 19 नवंबर को मयंक की मौत हो गई। बीते दिनों हेयर ट्रांसप्लांट के बाद मौत का मामला सामने आया तो प्रमोदिनी कानपुर पहुंचीं और पुलिस को शिकायत दी। बताते हैं कि डॉ. अनुष्का ने विडियो कॉल के जरिए मयंक के इलाज के बारे में बताया था। सूजन इतनी ज्यादा थी कि मयंक को दिखना बंद हो गया था। उसके होंठ लटक गए थे। पीड़ित पक्ष का दावा है कि उनके पास सारे सबूत हैं।

स्वराज इंडिया www.swarajindianews.com कानपुर सिटी कानपुर, बुधवार 14 मई, 2025 04

हेयर ट्रांसप्लांट में विनीत दुबे के बाद मयंक कटियार की चली गई जान

मयंक कटियार की कहानी– दर्द में तड़पता रहा बेटा, डॉक्टर ने नहीं की मदद

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। गंजापन से जूझ रहे लोगों को हेयर ट्रांसप्लांट के इलाज के नाम पर जान से खिलवाड़ किया जा रहा है। कानपुर की डॉक्टर अनुष्का तिवारी पर लापरवाही का गंभीर आरोप लगा है। अब तक 2 इंजीनियरों विनीत दुबे और मयंक कटिहार की जान जा चुकी है। दोनों ही मामलों में परिजनों का आरोप है कि डॉक्टर ने इलाज में गंभीर लापरवाही की और मरीजों की हालत बिगड़ने के बावजूद सही उपचार नहीं दिया।

मिली जानकारी के मुताबिक, फर्रुखाबाद के रहने वाले इंजीनियर मयंक कटिहार ने 18 नवंबर 2024 को कानपुर में डॉक्टर अनुष्का तिवारी के क्लिनिक में हेयर ट्रांसप्लांट कराया था। मयंक की मां प्रमोदिनी कटिहार और भाई कुशाग्र कटिहार ने बताया कि इलाज के बाद डॉक्टर ने मयंक को सिर्फ एक दर्द की गोली देकर घर भेज दिया। घर जाते समय मयंक को सिर में तेज दर्द हुआ। घर पहुंचते ही उसकी हालत और खराब हो गई – चेहरा सूज गया, आंखें बाहर निकलने जैसी हो गईं। मयंक और उसके परिवार ने बार-बार डॉक्टर से संपर्क किया, लेकिन हर बार डॉक्टर ने कहा कि सब ठीक है और घबराने की जरूरत नहीं है। बताया जा रहा है कि जब मयंक की हालत और खराब हुई तो डॉक्टर ने कहा कि किसी कार्डियोलॉजिस्ट को दिखा दो। जब कार्डियोलॉजिस्ट ने बताया कि मयंक को दिल से जुड़ी कोई बीमारी नहीं है, तब डॉक्टर ने उसे दोबारा अपने पास लाने को कहा। लेकिन सुबह 19 नवंबर को मयंक की मौत हो गई। मां प्रमोदिनी ने रोते हुए कहा कि मेरा बेटा कहता रहा कि बहुत दर्द हो रहा है, लेकिन डॉक्टर ने उसकी बात को गंभीरता से नहीं लिया। उसने हमारे नंबर भी ब्लॉक कर दिए और फोन बंद कर दिया।

विनीत दुबे की मौत– 56 दिन तक भटके परिजन, मुख्यमंत्री पोर्टल से दर्ज हुई एफआईआर

इससे पहले 15 मार्च 2025 को पनकी पावर हाउस में तैनात इंजीनियर विनीत दुबे ने भी डॉक्टर अनुष्का से हेयर ट्रांसप्लांट करवाया था। इलाज के बाद विनीत की तबीयत बिगड़ती गई और इलाज के दौरान ही उसकी मौत हो गई। परिजनों ने बताया कि उन्होंने 56 दिनों तक एफआईआर दर्ज कराने के लिए थानों और अधिकारियों के चक्कर लगाए, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। आखिरकार मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत करने के बाद रावतपुर थाने में रिपोर्ट दर्ज हुई।

अब मयंक का परिवार भी मांगेगा न्याय

मयंक के भाई कुशाग्र कटिहार ने बताया कि वे बुधवार को एसीपी अभिषेक पांडे से मिलेंगे, जो पहले से ही विनीत दुबे केस की जांच कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम भी डॉक्टर के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराएंगे ताकि और किसी की जान इस लापरवाही की वजह से न जाए। मयंक की मौत के वक्त पोस्टमार्टम नहीं कराया गया था, इसलिए तब रिपोर्ट दर्ज नहीं की गई थी। लेकिन जब विनीत का मामला सामने आया और डॉक्टर के खिलाफ एफआईआर हुई, तब मयंक का परिवार भी सामने आया और न्याय की मांग करने लगा।

क्या कहता है कानून..?

अगर इलाज में लापरवाही से किसी की मौत होती है, तो संबंधित डॉक्टर के खिलाफ ह्ल्वक्क्ष्ट की धारा 304 (लापरवाही से मौत) के तहत मामला दर्ज हो सकता है। इसके लिए मेडिकल काउंसिल से भी डॉक्टर के लाइसेंस की जांच हो सकती है।

परिजनों की मांग

डॉक्टर अनुष्का तिवारी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई हो।

क्लिनिक की जांच की जाए।

भविष्य में किसी और मरीज के साथ ऐसा न हो, इसके लिए मेडिकल गाइडलाइंस सख्ती से लागू की जाएं।

विसरा रिपोर्ट का इंतजार

कानपुर के सीएमओ ने बताया कि मार्च में हुई मौत के मामले में पोस्टमॉर्टम हुआ था। पोस्टमॉर्टम में मौत की वजह साफ न होने पर विसरा जांच के लिए भेजा गया था। रिपोर्ट का इंतजार है। वहीं डॉ अनुष्का के बारे में जांच जारी है। रिपोर्ट आने पर कुछ कहा जा सकेगा।बताते है कि आमतौर पर हेयर ट्रांसप्लांट में डेढ़ से 2 लाख रुपये का खर्च आता है, लेकिन डॉ अनुष्का 50 से 80 हजार रुपये में ये काम करती थी।

युवक-युवती ने फंदा लगाकर दी जान

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। नरवल थाना क्षेत्र में पारिवारिक रिश्ते में भाई–बहन ने फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। दोनों के शव उनके घरों में लटके मिले।कानपुर में नरवल थाना क्षेत्र के अंतर्गत दीपापुर गांव में संदिग्ध परिस्थितियों में रिश्ते में पारिवारिक बहन–भाई ने अपने–अपने घर पर फंदा लगाकर जीवन लीला समाप्त कर ली।

जानकारी के अनुसार, दीपापुर गांव के रहने वाले विनय यादव की पुत्री पूर्णिमा (18) इंटर की छात्रा है।

पड़ोस में ही रहने वाले अजय का पुत्र विपिन (20) इंटर की परीक्षा पास करके अब प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा था। बुधवार की शाम संदिग्ध परिस्थितियों में विपिन ने अपने घर पर रस्सी के सहारे फंदा लगाकर अपने जीवन लीला समाप्त कर ली।

विपिन की बहन का इंतजार

उसी के चंद घंटे बाद ही पारिवारिक चाचा की बेटी पूर्णिमा ने भी घर पर फंदा लगाकर जान दे दी। जानकारी के मुताबिक विपिन की बहन दिल्ली पुलिस में है। उसका इंतजार किया जा रहा है। फिलहाल दोनों परिवारों के परिजनों ने अभी तक पुलिस को सूचना नहीं दी है।

श्री गौरी हॉस्पिटल एंड ट्रॉमा सेंटर
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED HOSPITAL)
यू.पी.एस.आई.डी.सी. जैनपुर, कानपुर देहात
Mob: 9710106661, 7331010662, 7310106663
अल्ट्रासाउण्ड, सी.टी. स्कैन, डिजिटल एक्सरे की 24 घंटे सुविधा उपलब्ध
● आई0सी0यू0/सी0सी0यू0।
● वेंटीलेटर, ए0बी0जी0ए0, कारडियक मॉनीटर, मल्टीपैरा मॉनीटर की सुविधा।
● C-Arm युक्त वतानुकूलित ऑपरेशन थियेटर।
● ट्रामा स्पोर्ट हेड इन्जुरी का सफल इलाज।
● डिजिटल एक्स.रे, सी.टी. स्कैन, अल्ट्रासाउण्ड (U.S.G.) की सुविधा
आयुष्मान भारत योजना के तहत इलाज उपलब्ध है।
टी.पी.ए. कैशलेस की सुविधा उपलब्ध
उपलब्ध सुविधाएं:– ए0बी0जी0ए0 मशीन
1. अत्यंत कम वजन के नवजात शिशु एवं समय से पहले जन्में शिशुओं की विशेष देखभाल। 2. नवजात एवं बाल्य गहन चिकित्सा इकाई ;चप्ब्न्द्ध 3. चौबीस घंटे मेडिकल स्टोर, एक्सरे, पैथालॉजी, कैन्टीन की सुविधा। 4. नि:शुल्क एम्बुलेंस की सुविधा। 5. दूरबीन द्वारा पित्त एवं गुर्दे, यूरेटर की पथरी का ऑपरेशन, बच्चेदानी में गांठ का ऑपरेशन दूरबीन द्वारा किया जाता है। 6. गहन चिकित्सा इकाई, वेंटीलेटर सुविधा सहित। 7. सभी प्रकार के हड्डी रोग एवं ट्रामा सम्बंधित ऑपरेशन। 8. सिजेरियन ऑपरेशन/डिलेवरी/बच्चेदानी का ऑपरेशन अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटर। 9. कार्डियक मीनीटरिंग/इको कार्डियोग्राफी/सोनोग्राफी/टी.एम.टी.

डा. संजय त्रिपाठी
एम.बी.बी.एस., एमडी मेडिसिन
फेलोशिप क्रिटिकल केयर
विजय बाजपेई
मैनेजिंग डायरेक्टर

सम्पादकीय

पाक के हक में अरुणाचल की चाल

ऐसे वक्त में जब पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिये पाक को सबक सिखाया है, चीन प्रत्यक्ष व परोक्ष तौर पर पाकिस्तान का समर्थन करता नजर आ रहा है। चीन-पाक की दुरभिसंधि दशकों पुरानी है लेकिन उसकी हालिया करतूतों की टाइमिंग को लेकर सवाल उठ रहे हैं। वह न केवल पाकिस्तान की सैन्य व आर्थिक मदद ही कर रहा है बल्कि चीनी सरकारी मीडिया भी कुप्रचार व भ्रामक समाचार फैलाने में पाक के साथ खड़ा नजर आ रहा है। अब उसने अपनी नई करतूत अरुणाचल प्रदेश के स्थानों का नाम बदलकर उजागर की है। हालांकि, ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। लगातार तीसरे साल चीन ने भारतीय राज्य अरुणाचल प्रदेश के स्थानों का नाम बदला है। चीन अरुणाचल को जांगनान के नाम से दर्शाता है। वहीं इसे तिब्बत के दक्षिणी हिस्से के रूप में होने का दावा करता है। जैसा कि उम्मीद भी थी, भारत सरकार ने चीन के इन बेतुके दावों को सिरे से खारिज कर दिया है। नई दिल्ली ने बीजिंग के इस बेतुके-निराधार दावे को सिरे से नकार दिया है। भारत सरकार ने फिर से दोहराया है कि 'अरुणाचल भारत का अभिन्न और अविभाज्य हिस्सा था और हमेशा रहेगा।' दरअसल, चिंता की बात यह है कि चीन ने यह करतूत ऐसे समय में की है जब पहलगाम हमले और उसके जवाब में सफल 'ऑपरेशन सिंदूर' के चलते भारत-पाक के बीच तनाव कायम है। निश्चय ही इन स्थितियों में चीन का यह भड़काऊ कदम है। यहां उल्लेखनीय है कि भारतीय उपमहाद्वीप में हाल ही में हुई उथल-पुथल के दौरान पाकिस्तान को उसके सदाबहार दोस्त बीजिंग का भरपूर समर्थन मिला है। जिससे पता चलता है कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत से दोस्ती का हाथ बढ़ाने तथा व्यापार-कारोबार बढ़ाने की बात करने वाला चीन भारत के प्रति कैसी दुर्भावना रखता है। भले ही वह वैश्विक संगठनों व मंचों पर भारत के साथ खड़ा होने का दावा करता हो।निस्संदेह, ऐसी घटनाएं हमें सतर्क करती हैं कि चीन के साथ मैत्री संबंधों के निर्धारण के दौरान हमें सजग व सचेत रहना चाहिए। अन्यथा चीन पीठ पर वार करने से नहीं चूकने वाला है। बीते वर्ष विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने व्यंग्यात्मक लहजे में एक सवाल पूछा था, 'अगर आज मैं आपके घर का नाम बदल दूं तो क्या वो मेरा हो जाएगा?' लेकिन निर्विवाद रूप से चीन ने विदेश मंत्री के इस संदेश को नजरअंदाज ही किया है। इतना ही नहीं वह फिर से भौगोलिक क्षेत्रों के नामों के मनमाने मानकीकरण के साथ आगे बढ़ गया है। लेकिन सवाल इस करतूत के समय का है। जाहिर बात है कि बीजिंग ने ऐसा न केवल चुनौतीपूर्ण समय में भारत का ध्यान भटकाने के लिये किया है, बल्कि पाकिस्तान के साथ एकजुटता दिखाने के लिये भी किया है। उस पाकिस्तान को, जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने सोमवार को राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में कड़ी चेतावनी दी थी। प्रधानमंत्री ने सिर्फ और सिर्फ पाकिस्तान द्वारा कब्जाए कश्मीर पर ही बातचीत करने की बात कही थी। उसने तथ्यों और स्रोतों को पुष्टि किए बिना पाकिस्तान की सेना द्वारा भारतीय लड़ाकू विमान को मार गिराए जाने की रिपोर्ट दी थी। दिल्ली ने बुधवार को भारत में चीनी मुखपत्र ग्लोबल टाइम्स के एक्स-अकाउंट हैंडल को कुछ घंटों के लिये ब्लॉक कर दिया था। निस्संदेह, चीनी शरारतें उनके नेताओं के भारत के प्रति हाल के प्रयासों के विपरीत हैं। ऐसे में चीनी विदेश मंत्री वांग यी द्वारा परिकल्पित ड्रैगन और हाथी के बीच दोस्ती का प्रपंच तब तक एक दूर का सपना ही रहेगा, जब तक कि चीन पाकिस्तान को बचाने के प्रयासों में लगा रहेगा।

भारत की अनमोल धरोहर की नीलामी

शिवकान्त शर्मा

पिपरहवा की खुदाई से मिले रत्न ईसा से कम से कम दो से ढाई सौ साल पुराने होने के कारण भारत से मिली प्राचीनतम सांस्कृतिक धरोहरों में गिने जाते हैं। भगवान बुद्ध के अस्थि कलशों में रखे होने के कारण उनका धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व उन्हें अनमोल बनाता है। ऐसे में इनकी नीलामी हर हाल में रोकी जानी चाहिए।हांगकांग में होने वाली भगवान बुद्ध के अनमोल श्रद्धा रत्नों की नीलामी ने एक बार फिर इस बात पर बहस छेड़ दी है कि क्या विश्व की अनमोल सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर को नीलाम होने देना सही है? गत सप्ताह जिन 371 रत्नों और स्वर्ण एवं रजत पत्रकों की नीलामी होने वाली थी वे आज से लगभग सवा सौ साल पहले 1898 में उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थ नगर ज़िले के पिपरहवा गांव में एक बौद्ध स्तूप की खुदाई में मिले थे। पिपरहवा नेपाल की सीमा पर स्थित है और माना जाता है कि शाक्य गणराज्य की राजधानी कपिलवस्तु यहीं पर थी।

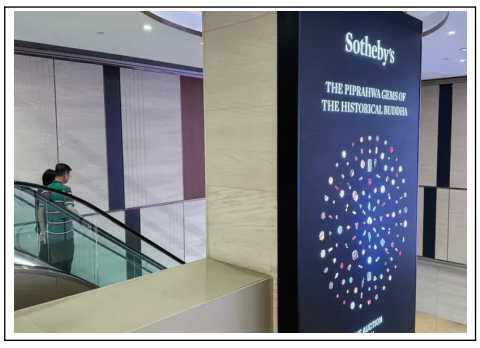

खुदाई इस इलाक़े के ब्रितानी ज़मींदार विलियम क्रैक्सटन पेपे ने कराई थी जो पेशे से इंजीनियर थे। खुदाई में 130 फुट व्यास वाले ईंटों से बने स्तूप के भीतर पत्थर का एक संदूक मिला था जिसमें पांच पाषाण कलश थे। इनमें भगवान बुद्ध की अस्थियों और भस्म के साथ 1800 से अधिक मोती, माणिक, पुखराज और नीलम जैसे रत्न और सोने व चांदी के पत्रक रखे थे जिन पर बौद्ध आकृतियां बनी हुई थीं। इनमें से एक कलश पर ब्राह्मी लिपि में प्राचीन पाली में लिखा था कि 'इस स्मारक स्तूप में भगवान बुद्ध की वे अस्थियां विराजमान हैं जो उनके शाक्यवंशी स्वजनों को मिली थीं।'कुशीनगर में भगवान बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद उनकी अस्थियां शाक्यवंशियों ने चारों दिशाओं से आए आठ गणराज्यों के प्रतिनिधियों में बांट दी थीं ताकि वे अपने-अपने यहां स्तूप बनाकर उनकी स्थापना कर सकें और अधिक से अधिक लोग उनका दर्शन करने जा सकें। इस प्रकार अस्थियां आठ गणराज्यों के स्तूपों में रखी गई थीं। माना जाता है कि पिपरहवा का स्तूप उन्हीं में से एक है जिसे एक ब्राह्मण ने महात्मा बुद्ध के शाक्यवंशियों के लिए बनवाया था। इसलिए इसे पुरातत्व की सबसे बड़ी खोजों में गिना गया। स्तूपों में बुद्ध की अस्थियों के साथ बहुमूल्य रत्न, सोने और चांदी के पत्रकों और मुद्राओं को रखने की परंपरा भी थी जिसके लिए लोग दिल खोलकर दान देते थे। विलियम पेपे ने अपने रिकॉर्ड में लिखा है कि खोज के पुरातात्विक और धार्मिक महत्व को समझते ही उन्होंने यह धरोहर ब्रितानी सरकार के हवाले कर दी थी। सरकार ने रत्नों और अस्थियों को अलग करते हुए रत्नों का छठा हिस्सा पेपे को दे दिया। बाकी बचे रत्नों और अस्थियों में से कुछ हिस्सा बौद्ध देश थाइलैंड के राजा चूडालंकरण द्वारा भेजे गए भिक्षुदूत को दिया और बाकी कोलकाता और कोलंबो के संग्रहालयों में भेज दिया था। हांगकांग में जिन रत्नों और सोने-चांदी के पत्रकों की नीलामी की कोशिश हो रही है वे वही हैं जो ब्रितानी सरकार ने विलियम पेपे को दिए थे।

नीलामी करने वाली कंपनी सोदबीज़ ब्रितानी मूल की बहुराष्ट्रीय कंपनी है जो सांस्कृतिक महत्व की धरोहरों की नीलामी करने के कारण अक्सर विवादों में रहती है। छह साल पहले न्यूज़ीलैंड के माओरी आदिवासियों की काष्ठ कलाकृति की लगभग छह करोड़ रुपये में हुई नीलामी को लेकर विवाद हुआ था और सरकार से कलाकृति वापस लाने की मांगें की गई थीं। भगवान बुद्ध के श्रद्धा रत्नों की नीलामी तो और भी विवादास्पद है। उन्होंने कई बौद्ध भिक्षुओं, मठों और विद्वानों से पूछने के बाद ही इन्हें नीलाम करने का फ़ैसला किया है ताकि ये किसी ऐसे व्यक्ति या संस्था के पास चले जाएं जो इनकी सही देखभाल और सार्वजनिक प्रदर्शनी कर सके। उनका कहना है कि उनके परदादा को वही रत्न और पत्रक दिए गए थे जो संग्रह में एक से अधिक संख्या में मौजूद थे। इसलिए जिन्हें नीलाम किया जा रहा है उनके जैसे दूसरे रत्न और पत्रक कोलकाता, बैंकाक और कोलंबो के संग्रहालयों में मौजूद हैं। उनका यह भी कहना है कि उन्होंने इन्हें दान करने के लिए कई बौद्ध मठों और बौद्ध देशों के संग्रहालयों से संपर्क किया था पर कहीं से संतोषजनक उत्तर नहीं मिला।लेकिन दुनियाभर के बहुत से बौद्ध मतावलंबी क्रिस पेपे के स्पष्टीकरण से संतुष्ट नहीं हैं।

लाहौर केस की स्वतंत्रता आंदोलन में निर्णायक भूमिका

शहीद सुखदेव जयंती

प्रो. बृज भूषण गोयल

लाहौर केस भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक निर्णायक मुकदमा था, जिसमें सुखदेव, भगत सिंह और राजगुरु को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए फांसी दी गई। यह केस भारतीय युवाओं में देशभक्ति की भावना जगाने वाला सिद्ध हुआ। शहीद सुखदेव का जीवन देश के लिए संघर्ष और बलिदान की मिसाल है।

लाहौर षड्यंत्र केस, 'क्राउन बनाम सुखदेव एवं अन्य', भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक ऐतिहासिक मुकदमा था। इसमें लुधियाना के नौघरा मोहल्ले में 15 मई, 1907 को जन्मे सुखदेव थापर, भगत सिंह, राजगुरु सहित 22 युवाओं को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध क्रांतिकारी गतिविधियों का आरोपी बनाया गया। वर्ष 1920 के दशक में शुरू हुई इन घटनाओं ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी। अंततः इस क्रांतिकारी त्रिमूर्ति को 23 मार्च, 1931 को फांसी दे दी गई। यह केस आजादी आंदोलन का निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ।

शहीद सुखदेव का जीवन बचपन से ही संघर्षों से भरा रहा। उनके पिता राम लाल थापर का देहांत हो गया जब वे केवल 3 वर्ष के थे। उनका पालन-पोषण उनके ताया अचिंतराम थापर ने लायलपुर (अब पाकिस्तान) में किया, जो स्वतंत्रता संग्राम के समर्थक थे। उनकी गिरफ्तारी ने बालक सुखदेव के मन में ब्रिटिश शासन के प्रति रोष पैदा किया। सुखदेव और भगत सिंह के परिवारों में घनिष्ठ संबंध थे। दोनों ने स्कूली शिक्षा के बाद लाहौर के नेशनल कॉलेज में प्रवेश लिया, जहां उन्हें समाजसेवा और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा मिली और उन्होंने क्रांतिकारी राह चुनी। कॉलेज में पढ़ाई के दौरान सुखदेव और भगत सिंह को बौद्धिक स्वतंत्रता, विचार अभिव्यक्ति और क्रांतिकारियों की गतिविधियों पर चर्चा का

अवसर मिला। वे गंभीर अध्ययन करते थे। लाहौर शिक्षा और क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र था। मार्च 1926 में भगत सिंह और सुखदेव ने 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना की। इसके जरिये पंजाब के युवाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने को प्रेरित किया।लाहौर के क्रांतिकारी युवाओं ने उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान और पंजाब के साथियों से मिलकर 8-9 सितंबर 1928 को दिल्ली में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के गठन की घोषणा की। चंद्रशेखर आज़ाद को संगठन कमांडर नियुक्त किया गया, जबकि संगठनात्मक क्षमता देखते हुए सुखदेव को पंजाब प्रभारी बनाया। संगठन का उद्देश्य ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह था। सहारनपुर, आगरा व लाहौर में बम निर्माण कार्य शुरू किया।लाहौर में 30 अक्तूबर, 1928 को सुखदेव के नेतृत्व में नौजवान भारत सभा और अन्य राजनीतिक संगठनों ने लाला लाजपत राय के साथ मिलकर साइमन कमीशन के विरोध में प्रदर्शन किया। पुलिस अधीक्षक जेम्स ए. स्कॉट के आदेश पर निर्दय लाठीचार्ज हुआ, जिसमें लाला जी गंभीर घायल हो गए। उन्होंने घायल अवस्था में सभा में कहा, 'मेरी छाती पर लगी एक-एक चोट अंग्रेजी शासन के कफ़न में कील साबित होगी।' लाला जी की कुछ दिनों बाद मृत्यु हो गई। इस क्रूरता से व्यथित होकर सुखदेव सहित एच.एस.आर.ए. के क्रांतिकारियों ने स्कॉट से बदला लेने का निर्णय लिया। सुखदेव और उनके साथियों ने जेम्स ए. स्कॉट की गतिविधियों पर नजर रखनी शुरू की। सुखदेव द्वारा बनाई गई योजना के तहत भगत सिंह, राजगुरु, चंद्रशेखर आज़ाद और जयगोपाल को स्कॉट की हत्या का कार्य सौंपा। 17 दिसंबर 1928 को कार्रवाई की गई, लेकिन गलती से स्कॉट की जगह ए.एस.पी. जे.पी. सांडर्स को गोली मार दी। सभी क्रांतिकारी पहचान बदलकर कलकत्ता रवाना हो गए। कलकत्ता में सुखदेव ने बम निर्माण तकनीक सीखी और पुनः दिल्ली में गतिविधियां बढ़ाने लगे।1929 में ब्रिटिश सरकार ने दिल्ली विधानसभा में पब्लिक सेफ्टी बिल समेत दो बिल प्रस्तुत किए, जिनका उद्देश्य क्रांतिकारी गतिविधियों को दबाना था जिनके विरोध में एच.एस.आर.ए. ने 8 अप्रैल 1929 को विधानसभा में बम फोड़ने की योजना बनाई। यह कार्य सुखदेव ने भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को सौंपा। बम और पर्चे फेंकने के बाद भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने 'इंकलाब ज़िंदाबाद' के नारे लगाए और अपनी गिरफ्तारी दी।

तनाव कम करने के लिए करें

इन योगासनों का अभ्यास

उच्च रक्तचाप को हाइपरटेंशन कहा जाता है। यह एक ऐसी स्थिति है, जिसमें धमनी की दीवारों पर रक्त का दबाव बहुत अधिक होता है, जिससे रक्तचाप सामान्य से अधिक हो जाता है। हर साल हाइपरटेंशन डे 17 मई को मनाया जाता है। तनाव से रक्तचाप बढ़ जाता है लेकिन यह सीधे उच्च रक्तचाप का कारण नहीं है। तनाव की प्रक्रिया के दौरान शरीर एड्रेनालाईन और कोर्टिलोन जैसे हार्मोन जारी करता है जिससे दिल की धड़कन तेज हो जाती है और रक्त वाहिकाएं संकुचित हो जाती है, जिससे अस्थायी रूप से रक्तचाप बढ़ जाता है।

तनाव कम करने के लिए कुछ योगासनों का नियमित अभ्यास बहुत लाभकारी हो सकता है। ये आसन शरीर को शिथिल करते हैं, मन को शांत करते हैं और मानसिक स्पष्टता बढ़ाते हैं। इस लेख में जानिए योगासन को कम करने के लिए योग।

बालासन-यह आसन मस्तिष्क को शांति देता है और मानसिक तनाव को कम करता है। यह पीठ, कंधे और गर्दन के तनाव को भी दूर करता है। बालासन आसन तनाव को कम करने और पूरे शरीर में ब्लड सर्कुलेशन को बेहतर बनाने में मदद करता है।

शवासन-शवासन शरीर और मन को पूरी तरह से विश्राम देता है। तनाव, चिंता और थकान दूर करने के लिए सबसे प्रभावी आसन माना जाता है। शवासन का अभ्यास तनाव कम करने और ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रकने में असरदार है।

सेतुबंधासन -नोट-यह लेख योग विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर तैयार किया गया है। आसन की सही स्थिति के बारे में जानने के लिए किसी योग गुरु से संपर्क कर सकते हैं।

अस्वीकरण- हेल्थ एवं फिटनेस कैटेगरी में प्रकाशित सभी लेख डॉक्टर, विशेषज्ञों व अकादमिक संस्थानों से बातचीत के आधार पर तैयार किए जाते हैं। इस लेख को तैयार करते समय सभी तरह के निर्देशों का पालन किया गया है।

संबंधित लेख पाठक की जानकारी व जागरूकता बढ़ाने के लिए तैयार किया गया है। और न ही जिम्मेदारी लेता है। उपरोक्त लेख में उल्लेखित संबंधित बीमारी के बारे में अधिक जानकारी के लिए अपने डॉक्टर से परामर्श लें।

किडनी को डिटॉक्स करती हैं रोज सुबह की आदतें

आज से ही दिनचर्या में करें शामिल

किडनी हमारे शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंगों में से एक है। अक्सर लोग किडनी से संबंधित समस्याओं से परेशान रहते हैं। आइए इस लेख में कुछ ऐसी आसान आदतों के बारे में जानते हैं, जिन्हें अपनाकर आप किडनी को डिटॉक्स कर सकते हैं। किडनी हमारे शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो खून को फिल्टर करके टॉक्सिन्स को मूत्र के माध्यम से बाहर निकालता है। यह ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने और शरीर में तरल पदार्थों का संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है। लेकिन अनहेल्दी डाइट, तनाव और गलत जीवनशैली के कारण किडनी में टॉक्सिन्स जमा हो सकते हैं, जो इसकी कार्यक्षमता को प्रभावित करते हैं।

1. सुबह गुनगुने पानी में नींबू डालकर पिएं

सुबह एक गिलास गुनगुने पानी में आधा नींबू निचोड़कर पीना आपके समग्र स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है। इसके साथ ही ये किडनी को डिटॉक्स करने में भी मदद करता है। यह पेय पाचन तंत्र को सक्रिय करता है और किडनी में स्टोन होने के जोखिम को कम करता है। गुनगुना पानी किडनी में जमे अपशिष्ट पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है।

2. सुबह डीप ब्रीदिंग एक्सरसाइज करें

सुबह की शुरुआत डीप ब्रीदिंग एक्सरसाइज या प्राणायाम से करना किडनी को डिटॉक्स करने का एक प्रभावी तरीका है। गहरी सांस लेने की प्रक्रिया शरीर में ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाती है, जिससे रक्त संचार बेहतर होता है और किडनी को पर्याप्त ऑक्सीजन मिलता है।

3. नाश्ते में ग्रीन टी या हर्बल टी का सेवन करें

ग्रीन टी या हर्बल टी में एंटीऑक्सीडेंट्स, जैसे कैटेचिन, प्रचुर मात्रा में होते हैं, जो किडनी के कार्यक्षमता को बेहतर बनाते हैं और शरीर से टॉक्सिन्स को बाहर निकालते हैं। सुबह खाली पेट ग्रीन टी पीने से मेटाबॉलिज्म भी बढ़ता है।

4. नाश्ते में पानी से भरपूर फल खाएं

सुबह नाश्ते में पानी से भरपूर फल, जैसे तरबूज, संतरा, अंगूर या सेब, खाना किडनी को डिटॉक्स करने का शानदार तरीका है। ये फल शरीर को हाइड्रेट रखने में मदद करते हैं और किडनी से टॉक्सिन्स को बाहर निकालने में मदद करते हैं। इनमें मौजूद विटामिन्स और एंटीऑक्सीडेंट्स किडनी के स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं।

कैसे बनाएं इन आदतों को दिनचर्या का हिस्सा?

इन आदतों को रोजाना एक ही समय पर करें

नमक, प्रोसेस्ड फूड और कैफीन का सेवन संतुलित मात्रा में करें।

दिनभर 8-10 गिलास पानी पीना किडनी के लिए बहुत फायदेमंद होता है।

अगर आपको किडनी से संबंधित पहले से कोई भी समस्या है, तो इन आदतों को अपनाने से पहले डॉक्टर से सलाह लें।

वाजिदपुर में टेनरी में लगी भीषण आग, शॉर्ट सर्किट से हुआ हादसा

फायर ब्रिगेड की टीम ने पाया काबू

कानपुर। जाजमऊ थानाक्षेत्र के वाजिदपुर में एक टेनरी में भीषण आग लग गई। लोगों ने पानी डालकर बुझाने का प्रयास किया, लेकिन सफलता नहीं मिली। सूचना पर पहुंची दमकल टीम ने काबू पाया।

कानपुर में जाजमऊ थाना क्षेत्र के वाजिदपुर में परवीन लेदर टेनरी में गुरुवार दोपहर 11 बजे आग लग गई। टेनरी में काम करने वाले कर्मचारियों ने पानी डालकर आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन सफलता नहीं मिली। सूचना पर पहुंची दमकल की एक गाड़ी ने आग पर काबू पाया।डिफेंस कॉलोनी निवासी काशिफ लारी की वाजिदपुर संजय नगर में लारी टैनर्स एक्सपोर्ट्स नाम से टेनरी है।

इसमें चमड़े का काम पहले होता है, जबकि नीचे बेल्ट का काम होता है। गुरुवार दोपहर 11 बजे कर्मचारी स्प्रे डिपार्टमेंट में लोहे में वेल्डिंग कर रहे थे।

हादसे में लगभग एक लाख का नुकसान

इसी दौरान अचानक से शॉर्ट सर्किट से आग लग गई। आग लगने से लोहा और चमड़ा जलने लगा। काम कर रहे एक दर्जन कर्मचारी बाहर निकल आए। सूचना पर पुलिस व दमकल विभाग मौके पर पहुंची। दमकल की एक गाड़ी ने आग पर काबू पा लिया। हालांकि, आग से करीब एक लाख का नुकसान बताया जा रहा है।

पाकिस्तान के मददगार तुर्किए को सबक सिखाने की शुरुआत

सीएसजेएम यूनिवर्सिटी कानपुर ने तुर्किए के इस्तांबुल विश्वविद्यालय के साथ अपना शैक्षणिक समझौता तत्काल प्रभाव से रद कर दिया है

स्वराज इंडिया संवाददाता

कानपुर। ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान के मददगार तुर्किए के खिलाफ बने देशव्यापी माहौल और सुरक्षा कारणों को देखते हुए छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय (सीएसजेएमयू), कानपुर ने तुर्किए के इस्तांबुल विश्वविद्यालय के साथ अपना शैक्षणिक समझौता तत्काल प्रभाव से रद कर दिया है।

दोनों विश्वविद्यालयों के बीच यह समझौता बीते वर्ष 15 नंवबर को हुआ था। सीएसजेएमयू के कुलपति के अनुसार तुर्किए के शत्रु देश के साथ खड़ा होने के कारण एमओयू तोड़ दिया गया है और इसकी सूचना इस्तांबुल विश्वविद्यालय को भेज दी गई है।

15 नवंबर को सीएसजेएमयू कानपुर के कुलपति व भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष प्रो. विनय कुमार पाठक तथा इस्तांबुल विश्वविद्यालय तुर्किए के रेक्टर प्रो. जुल्फिकार ने आपसी समझ के समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।

यह समझौता इस्तांबुल विश्वविद्यालय में रेक्टर के कार्यालय में हुआ था। समझौते के तहत दोनों विश्वविद्यालयों के छात्र और शिक्षक उच्च शिक्षा के क्षेत्र में वैश्विक स्तर के अनुसंधान और अकादमिक डेवलेपमेंट के लिए एक साथ मिलकर कार्य करने वाले थे।

सीएसजेएमयू के कुलपति का कहना है कि कोई भी शैक्षणिक समझौता देश से बड़ा नहीं है। सीएसजेएमयू अब तक 20 से अधिक

विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ शैक्षणिक उन्नयन, शोध और अनुसंधान के समझौते कर चुका है।

इसके लिए विवि में अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एवं अकादमिक सहयोग प्रकोष्ठ कार्यरत है, जो विदेशी छात्रों को सीएसजेएमयू में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित भी करता है।

सीबीएसई बोर्ड में कनिका की चमक, पिता ने बाँटे 30 किलो लड्डू

» सरवनखेड़ा की बेटी कनिका गुप्ता ने 83.4 प्रतिशत अंक लाकर टॉप किया, एयरफोर्स में फ्लाइट सर्जन बनने का सपना

स्वराज इंडिया ब्यूरो

कानपुर देहात। सीबीएसई बोर्ड परीक्षा में इस बार फिर बेटियों ने अपना परचम लहराया है। ब्लॉक सरवनखेड़ा क्षेत्र की छात्रा कनिका गुप्ता ने 10वीं में 83.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर क्षेत्र में टॉप किया। इस उपलब्धि से पूरे क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। वहीं कनिका के पिता ने बेटी की इस कामयाबी पर गजनेर कस्बे में 30 किलो लड्डू बाँटकर अपनी खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा कि बेटियां किसी से कम नहीं हैं, जो समाज बेटियों को बोझ समझता है, उसे आज जवाब मिल गया है।

स्वराज इंडिया संवाददाता सचिन सिंह से बातचीत में कनिका के पिता नीरज गुप्ता ने कहा कि जब देश की बेटियां विंग कमांडर व्योमिका सिंह और कर्नल सोफिया कुरैशी की तरह दुश्मनों को करारा जवाब दे सकती हैं, तो हमें अपनी बेटियों पर गर्व करना चाहिए। उन्होंने कहा कि कनिका ने सिर्फ हमारा ही नहीं, पूरे क्षेत्र का नाम रोशन किया है।कनिका गुप्ता ने बताया कि वह एयरफोर्स में फ्लाइट सर्जन बनना चाहती हैं। उन्होंने कहा, मेरी आदर्श विंग कमांडर व्योमिका सिंह हैं। मैं भी देश की सेवा करना

चाहती हूं। मेरे माता-पिता मेरे सपनों में पूरी तरह साथ हैं। मैं मेहनत और लगन से पढ़ाई करूंगी और अपने माता-पिता व क्षेत्र का नाम रोशन करूंगी।

देहात वासियों के लिए वरदान से कम नहीं आयुष चिकित्सालय

» शहजादपुर गांव के पास हाइवे पर 50 शैय्या एकीकृत आयुष् चिकित्सालय में लगातार फिजियोथैरेपी या भौतिक चिकित्सा के मरीजों का हो रहा सफल उपचार

स्वराज इंडिया संवाददाता

कानपुर देहात। आयुष मंत्रालय के आयुष मिशन के अंतर्गत खुलने वाले 50 शैय्या एकीकृत आयुष चिकित्सालय में भी फिजियोथैरेपिस्ट या भौतिक चिकित्सक देहात वासियों के वरदान से कम नहीं है। जनपद कानपुर देहात में शहजादपुर गांव के पास हाइवे पर 50 शैय्या एकीकृत आयुष् चिकित्सालय में लगातार फिजियोथैरेपी या भौतिक चिकित्सा के माध्यम से रोगियों को लाभान्वित होने का अवसर प्राप्त हो रहा है। चिकित्सा अधीक्षक डॉ बृजेश आर्य के निर्देशन में क्षेत्रीय आयुर्वेदिक यूनानी चिकित्सा अधिकारी डॉ मनोज वर्मा के मार्गदर्शन से 50 शैय्या एकीकृत आयुष चिकित्सालय में आधुनिक मशीनों के माध्यम से रोगियों को दर्द में राहत पहुंचाने तथा रोग विकारों और व्याधियों से बचने के लिए फिजियोथैरेपिस्ट भौतिक चिकित्सक डॉ. मो.जियाउर्रहमान एम.पी.टी.(न्यूरो) लगातार प्रयासरत हैं। अकबरपुर निवासी गुलाब देवी जो पिछले कई महीने से कमर दर्द और घुटने के दर्द से पीड़ित थी उन्होंने चिकित्सालय में आकर आयुर्वेद चिकित्सक को दिखाया।

आयुर्वेद चिकित्सक के द्वारा भौतिक चिकित्सक या फिजियोथैरेपिस्ट से परामर्श लेने की उनको सलाह दी गई भौतिक

चिकित्सा पद्धति से मरीज को काफी लाभ हुआ। जैसा कि उन्होंने बताया कि पिछले कई दिनों से वह कमर के दर्द से इतना ज्यादा पीड़ित थी कि उनको चलने फिरने में बैठने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा था। 50 शैय्या एकीकृत आयुष चिकित्सालय के फिजियोथैरेपी एंड रिहैबिलिटेशन डिपार्मेंट यानी भौतिक चिकित्सा और पुनर्वास विभाग में डॉक्टर मो जियाउर्रहमान एमपीटी ने भौतिक चिकित्सा से उपचार कर रोगी के जीवन यापन को आसान बनाने का प्रयास किया! कई महीने से पीड़ित और भी मरीज से बात करने पर पता चला कि ,आयुर्वेदिक ,यूनानी, होम्योपैथी चिकित्सा के साथ उनकी भौतिक चिकित्सा व पंचकर्म चिकित्सा भी होने से उन्हें बड़ी राहत महसूस हो रही है। ऐसे तमाम मरीज हैं जिनको आराम हुई।

फिजियोथैरेपी से जटिल से जटिल शारीरिक समस्याओं का सुधार संभव

भारत सरकार के राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन कार्यरत राष्ट्रीय संबद्ध स्वास्थ्य देखभाल व्यवसाय आयोग ने फिजियोथैरेपी करिकुलम पुस्तिका 2025 में पृष्ठ नंबर 29 में उल्लेख है भौतिक चिकित्सक फिजियोथेरेपिस्ट प्राथमिक स्वास्थ्य पेशेवर है जो व्यापक परीक्षण और उचित जांच करके फिजियोथेरेपी का प्रबंधन व उपचार करता है, किसी भी व्यक्ति को कार्यात्मक शिथिलता, खराबी, विकार, विकलांगता, आघात और बीमारी से उपचार और दर्द के संबंध में या उसके लिए तैयारी करने के लिए उपचार और सलाह प्रदान करता है, रोकथाम, जांच, निदान, उपचार, स्वास्थ्य संवर्धन और फिटनेस के लिए व्यायाम, फिजियोथेरेपिस्ट स्वतंत्र रूप से या बहु-विषयक टीम के हिस्से के रूप में प्रबंधन या उपचार कर सकता है और उसके पास स्नातक की डिग्री की न्यूनतम योग्यता है। (एनसीएएचपी अधिनियम 2021)

बहुविषयक स्वास्थ्य पेशेवरों की टीम के भीतर, फिजियोथेरेपी उपचार/प्रबंधन के प्रशासन के लिए जिम्मेदार पेशेवर को फिजियोथेरेपिस्ट के रूप में मान्यता दी जाती है। फिजियोथेरेपिस्ट को कभी-कभी फिजिकल थेरेपिस्ट के रूप में संदर्भित किया जाता है। फिजियोथेरेपिस्ट शब्दावली एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनाई गई शब्दावली है और इसलिए इसे भारतीय संदर्भ में भी लागू किया जाना चाहिए।

आयोग किसी भी स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर को फिजियोथेरेपिस्ट के रूप में मान्यता देता है, जिसने आयोग के नियमों के अनुसार मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय/कॉलेज से फिजियोथेरेपी में स्नातक की डिग्री हासिल की हो। इस प्रकार अनुशंसित पद फिजियोथेरेपिस्ट है, जिसमें उपसर्ग डॉ और प्रत्यय पीटी

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक सपना देवी द्वारा हर्षिता प्रिंटर्स 127/875, साकेत नगर, कानपुर नगर- 208012 (उप्र) से मुद्रित व 119/13, दर्शनपुरवा, कानपुर नगर- 208012 (उप्र) से प्रकाशित। **संपादक:** अनूप कुमार **RNI No.:** UPHIN/2023/86769 | **Email:** swarajindia2023@gmail.com | **Mob:** 7800009853, | **Website:** www.swarajindianews.com | (समस्त वाद-विवाद कानपुर न्यायालय के अधीन होंगे)

एसपी अरविंद मिश्र की तबादला एक्सप्रेस ने हिलाया महकमा

» पुलिस विभाग में बड़ा प्रशासनिक फेरबदल, कई थाना प्रभारी इधर से उधर

»तत्काल कार्यभार ग्रहण के आदेश

स्वराज इंडिया संवाददाता

कानपुर देहात। कानून-व्यवस्था को दुरुस्त रखने की कड़ी में पुलिस अधीक्षक अरविंद मिश्र ने बुधवार देर रात बड़े स्तर पर तबादले करते हुए जिले में प्रशासनिक हलचल मचा दी।

मीडिया सेल से प्राप्त जानकारी के अनुसार, निरीक्षक हरिओम त्रिपाठी को थाना बरौर से हटाकर थाना सिकंदरा का प्रभारी निरीक्षक बनाया गया है, जबकि महेश कुमार को सिकंदरा से डेरापुर और फिर डेरापुर

से रिजर्व पुलिस लाइन भेजा गया है। इसी क्रम में ललिता मेहता को देवराहट से थाना अकबरपुर भेजा गया, वहीं सुनील तिवारी को जन शिकायत प्रकोष्ठ से देवराहट थाने की कमान सौंपी गई।

अन्य स्थानांतरण में उपनिरीक्षक अमिता वर्मा को लालपुर चौकी से थाना बरौर, शोभित कटियार को रूरा से पुखरायां, जितेंद्र कुमार तिवारी को पुखरायां से जैनपुर, भागमल को जैनपुर से जिला चिकित्सालय, अनूप पांडेय को जिला चिकित्सालय से देवीपुर, रामकिशुन को देवीपुर से रूरा भेजा गया है।

इसके अलावा सूरज पाल, गुरेंद्र प्रताप सिंह, अंकित यादव, अतेंद्र कुमार, रंजीत कुमार, दयानंद झा और रजनीश वर्मा के भी थानों में तबादले किए गए हैं।

एसपी ने सभी अधिकारियों को तत्काल प्रभाव से अपने-अपने नए कार्यस्थलों पर कार्यभार ग्रहण करने के निर्देश दिए हैं।

ग्राम पंचायतों में आरआरसी सेंटर ठप

» लाखों की योजनाएं हो रही बर्बाद

» ग्राम प्रधान-सचिवों की बेरुखी और विकास भवन में बैठे अफसरों की अनदेखी से योजनाएं बेअसर

शंकर सिंह स्वराज इंडिया

कानपुर देहात। कानपुर देहात की ग्रामीण पंचायतों में करोड़ों की लागत से बनाए गए रिसोर्स रिकवरी सेंटर (RRC) अब सफेद हाथी बनते जा रहे हैं। जिन सेंटरों का उद्देश्य गांवों में कूड़े-कचरे का निस्तारण और स्वच्छता को बढ़ावा देना था, वहां ग्राम प्रधान और सचिव संचालन में कोई रुचि नहीं दिखा रहे हैं। ब्लॉक मलासा के अधिकतर गांवों में सेंटर तैयार तो हैं, लेकिन संचालन ठप पड़ा है। खाद के गड्ढे और सोकपिट तो बना दिए गए, मगर कूड़ा गाड़ी की खरीदी नहीं हुई। पंचायती राज विभाग की कोशिशें भी बेअसर साबित हो रही हैं क्योंकि प्रधान और

सचिव आदेशों के बावजूद पीछे हट रहे हैं, और जिला प्रशासन मौन तमाशबीन बना हुआ है।

अफसरों के निरीक्षण बंद होते ही ठप हुआ संचालन, जनता देख रही मुंह

सरकार का इरादा था कि आरआरसी सेंटरों से वर्मी कंपोस्ट और जैविक खाद बनाकर न सिर्फ स्वच्छता लाई जाएगी, बल्कि ग्राम पंचायतों की आमदनी भी बढ़ेगी। डीपीआरओ विकास पटेल के निरीक्षण से कुछ सेंटर जरूर चले, लेकिन जैसे ही अफसरों का ध्यान हटता गया, संचालन रुक गया। अधिकारी अब

मीडिया रिपोर्ट पर ही आश्रित हैं। बजट की वापसी और नई वित्तीय स्वीकृति की प्रतीक्षा में काम अधर में लटका है। वहीं, कुछ प्रधान और सचिव खुलेआम यह कह रहे हैं कि जब बिना काम के ही बजट आ रहा है, तो अतिरिक्त मेहनत क्यों करें—ठीक वैसे ही जैसे मुंह लगी रेवड़ी, तो गुड़ कौन खाए।

बाराबंकी के औद्योगिक विकास के लिए डीएम शशांक त्रिपाठी की पहल

स्वराज इंडिया संवाददाता

बाराबंकी। जिले में औद्योगिक विकास को रफ्तार देने के लिए प्रशासनिक स्तर पर बड़ी पहल की जा रही है। जिलाधिकारी शशांक त्रिपाठी ने जानकारी दी है कि एमएसएमई स्वास्थ्य विभाग की बंद पड़ी कताई मिलों का पुनर्विकास किया जा रहा है, जिससे न सिर्फ पुराने संसाधनों का बेहतर उपयोग होगा, बल्कि युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी मिलेंगे।

» एमएसएमई MSME विभाग की बंद पड़ी कताई मिलों का पुनर्विकास किया जा रहा है

» आरएसघाट तहसील क्षेत्र में 80 हेक्टेयर क्षेत्र में एक नए औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना हो रही है।

जिलाधिकारी ने बताया कि आरएसघाट तहसील क्षेत्र में 80 हेक्टेयर क्षेत्र में एक नए औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना की जा रही है, जो बाराबंकी को उद्योग और निवेश के मानचित्र पर नई पहचान देगा। यह औद्योगिक क्षेत्र विशेष रूप से लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्योगों (MSME) के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करेगा।

उद्योगों को मिलेंगी बेहतर सुविधाएं

जिलाधिकारी ने कहा कि सरकार की प्राथमिकता है कि औद्योगिक इकाइयों को आधुनिक बुनियादी सुविधाएं, बिजली, जल आपूर्ति, परिवहन और सभी जरूरी अनुमतियाँ एक ही खिड़की प्रणाली के तहत उपलब्ध कराई जाएं।

इस दिशा में जिला प्रशासन तेजी से कार्य कर रहा है।

रोजगार सृजन पर दिया जा रहा ख़ास जोर

शशांक त्रिपाठी ने बताया कि कताई मिलों के पुनर्विकास और नए औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना से हजारों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा।

इससे न केवल स्थानीय युवाओं को लाभ होगा, बल्कि बाराबंकी में पलायन की समस्या पर भी अंकुश लगेगा।

निवेश को मिलेगा बढ़ावा

बाराबंकी अब धीरे-धीरे निवेशकों की पसंद बनता जा रहा है।

सरकार की ओर से उद्योग मित्र योजनाओं और अनुदानों का लाभ उठाने के लिए भी स्थानीय उद्यमियों को प्रेरित किया जा रहा है। प्रशासन का लक्ष्य है कि आने वाले वर्षों में बाराबंकी औद्योगिक विकास का एक मॉडल जिला बने।

डीएम शशांक त्रिपाठी

पुराना ग्राहक बताकर सराफा दुकानदार से टप्पेबाजी

स्वराज इंडिया संवाददाता

बाराबंकी। देवा कस्बे के एकता गेट के सामने स्थित मां वैष्णवी ज्वेलर्स पर बुधवार देर शाम दो बाइक सवार युवकों ने टप्पेबाजी की वारदात को अंजाम दिया।

दोनों युवक खुद को पुराना ग्राहक बताकर दुकान पर पहुंचे और सोने के तीन सिक्के लेकर फरार हो गए। घटना की सूचना मिलते ही देवा थाना पुलिस ने जांच शुरू कर दी है और सीसीटीवी फुटेज खंगाली जा रही है।

यह कोई पहला मामला नहीं है। बीते एक महीने में देवा क्षेत्र की कई सर्राफा दुकानों में चोरी और सेंधमारी की घटनाएं हो चुकी हैं। हालांकि कुछ मामलों का मुकामी पुलिस ने हाल ही में खुलासा भी किया था। लेकिन इन लगातार हो रही घटनाओं ने व्यापारी वर्ग को असुरक्षित महसूस करवा दिया है।

क्या हुआ घटना के दौरान ?

दुकानदार श्रीराम के वर्कर पंकज सोनी के अनुसार, बीते दिवस दो व्यक्ति तीन सोने के सिक्के बनवाने के लिए 50,000 रुपये एडवांस में दे गए थे। बुधवार को दो बाइक सवार युवक दुकान पर पहुंचे और कहा कि सिक्के तैयार हैं क्या। जैसे ही पंकज सोनी ने तीनों सिक्के काउंटर पर रखे, दोनों युवक उन्हें लेकर तेजी से बाइक पर सवार हुए और मौके से फरार हो गए। बताया जा रहा है कि तीनों सिक्कों की कीमत लगभग दो लाख रुपये थी।

पुलिस की कार्रवाई

घटना के बाद देवा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। पुलिस टीम ने आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। थाना प्रभारी का कहना है कि जल्द ही संदिग्धों की पहचान की जाएगी और उनकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम जुटी हुई है।

व्यापारी वर्ग में खौफ का माहौल

देवा के सर्राफा कारोबारियों का कहना है कि पिछले एक महीने में चोरी और सेंधमारी की घटनाओं में लगातार इजाफा हुआ है। व्यापारी असुरक्षित महसूस कर रहे हैं, क्योंकि कोई ठोस कार्रवाई अब तक नहीं हुई है। इससे बाजार में भय का माहौल बन गया है।

व्यापारियों की सुरक्षा संबंधी मांग

व्यापारियों ने प्रशासन से सुरक्षा व्यवस्था को कड़ा करने की मांग की है। उन्होंने रात्रि गश्त को भी बढ़ाने की अपील की है, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं पर अंकुश लगाया जा सके।

...रणक्षेत्र से कम नहीं यूपी का बेसिक शिक्षा विभाग !

प्रमुख संवाददाता स्वराज इंडिया

कानपुर। आज के बदलते समय में शिक्षक बनना एक बड़ी चुनौती बन चुका है। जो कभी एक गर्व का विषय था, वह अब एक जिम्मेदारी और संघर्ष बन गया है। जहां शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान देना और समाज को उज्वल बनाना था वही अब केवल नियमों और प्रक्रियाओं के बीच खो गया है। प्रश्न उठता है कि आखिर कोई क्यों अपने बच्चों को शिक्षक बनाए ? इस पेशे में अब वह प्रेरणा कहां है जो पहले शिक्षकों के प्रति सम्मान और आदर की भावना जगाती थी। पहले शिक्षक बनने के लिए एक आदर्श और प्रेरणादायक लक्ष्य होता था। माता-पिता अपने बच्चों को शिक्षक बनने के लिए प्रेरित करते थे क्योंकि यह एक सम्माननजनक पेशा माना जाता था। आज वही पेशा कहीं न कहीं अपने मूल उद्देश्य से भटक गया है।

» शिक्षक बनना उतना कठिन नहीं, जितना कठिन है सरकारी फरमानों को पूर्ण कर पाना

» सरकारी फरमानों को पूरा करने के लिए शिक्षक सारा दिन लड़ते हैं कागजी जंग

सरकारी नीति, अत्यधिक शिक्षणेत्तर गतिविधियाँ और अनियंत्रित नियमों की बाढ़ ने शिक्षक की भूमिका को सीमित और बंधनकारी बना दिया है। ऐसे में नए शिक्षक कैसे बनें और क्यों बनें, जब प्रेरणा का कोई स्त्रोत ही न हो। शिक्षक बनना अब केवल एक नौकरी रह गई है, जो वेतन और स्थायित्व के लिए की जाती है। शिक्षकों पर लगातार नए नियम और दबाव बढ़ते जा रहे हैं जिससे उनके पास विद्यार्थियों को शिक्षा देने के लिए पर्याप्त समय और ऊर्जा नहीं बचती। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट आई है और समाज में शिक्षकों का स्थान भी धीरे-धीरे गिरता जा रहा है।आज के शिक्षक उस जाल में फंसे हुए हैं जिसे उन्होंने खुद चुना नहीं था। शिक्षा में अधिक से अधिक शिक्षणेत्तर गतिविधियों की घुसपैठ हो गई है। कभी वे बच्चों को जागरूकता पर भाषण दे रहे होते हैं, तो कभी किसी सरकारी कार्यक्रम का आयोजन कर रहे होते हैं। असल पढ़ाई और बच्चों की बौद्धिक उन्नति के लिए समय कहां बचता है। शिक्षा का असली उद्देश्य भूलकर शिक्षक इन बाहरी गतिविधियों में उलझ गए हैं। अब सवाल यह है कि इस माहौल में कोई शिक्षक क्यों बने ? क्या यह आवश्यक है कि वे उस जिम्मेदारी का बोझ उठाएं जो उनके अपने हितों के विरुद्ध जाती है ?

नियमों की बदलती धाराएँ-

हर कुछ दिनों में नए नियम लागू होते रहते हैं जिनका शिक्षकों पर गहरा असर पड़ता है। शिक्षा के तरीकों को बदलने के नाम पर शिक्षकों पर दबाव डाला जाता है कि वे न केवल पढ़ाएं बल्कि बच्चों की हर छोटी-बड़ी गतिविधि पर ध्यान दें। इस प्रकार शिक्षक अब सिर्फ शिक्षा देने वाले नहीं रहे बल्कि वे ऐसे कार्य कर रहे हैं जो उनके कार्यक्षेत्र से बाहर के हैं। नियमों का पालन करते हुए शिक्षक खुद को एक कठपुतली सा महसूस करते हैं जिनकी डोर सरकार और नियमों के हाथों में है। सरकारी फरमानों को पूरा करने में शिक्षक पूरे दिन कागज पेन से जंग लड़ता रहता है। इस स्थिति में कोई क्यों इस पेशे को अपनाएगा ?

शिक्षक बनना जिम्मेदारी या मजबूरी

शिक्षक बनना कभी एक कर्तव्य था लेकिन आज यह अधिकतर लोगों के लिए मजबूरी बन गया है। कुछ लोग इसे केवल स्थिर नौकरी के रूप में अपनाते हैं जबकि अन्य लोग इसे इसलिए चुनते हैं क्योंकि उनके पास कोई अन्य विकल्प नहीं होता। सपना देखने वालों की संख्या कम हो रही है। समाज में बदलती धारणाओं और शिक्षा में हो रहे बदलावों के कारण शिक्षक बनने की प्रेरणा धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है लेकिन यह ध्यान रखना जरूरी है कि आज भी शिक्षा का महत्व खत्म नहीं हुआ है। समाज में शिक्षा और शिक्षक का महत्व बना रहेगा क्योंकि बिना शिक्षकों के समाज आगे नहीं बढ़ सकता। जो लोग इस पेशे को चुन रहे हैं वे उन कठिनाइयों को जानते हुए भी अपने कर्तव्यों को निभा रहे हैं।

भविष्य की दिशा-

शिक्षक बनने की प्रेरणा को पुनः जागृत करने के लिए हमें शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार की आवश्यकता है। शिक्षकों पर शिक्षणेत्तर गतिविधियों का बोझ कम किया जाना चाहिए ताकि वे अपने असल कर्तव्य यानी पढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर सकें। इसके अलावा शिक्षकों को अधिक स्वतंत्रता और सम्मान दिया जाना चाहिए ताकि वे आत्मविश्वास के साथ अपने कार्य कर सकें। शिक्षकों के अधिकारों और जिम्मेदारियों के बीच संतुलन स्थापित करना ही इस पेशे को फिर से प्रेरणादायक बना सकता है।

एआरपी चयन में बीटेक अभ्यर्थी भी होंगे गणित और विज्ञान विषय में आवेदन हेतु अर्ह

» न्यायमूर्ति सौरभ श्याम शमशेरी ने प्रशांत कुमार की याचिका का निस्तारण करते हुए यह निर्देश दिया

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बीटेक डिग्रीधारी अभ्यर्थियों को एआरपी नियुक्त होने के लिए अर्ह माना है। कोर्ट ने कहा कि इसे भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित विषय के साथ स्नातक डिग्री के समकक्ष योग्यता माना जाएगा। साथ ही बीटेक डिग्रीधारी अभ्यर्थियों को एआरपी की अगली भर्ती में अवसर देने का निर्देश दिया है। न्यायमूर्ति सौरभ श्याम शमशेरी ने प्रशांत कुमार की याचिका का निस्तारण करते हुए यह निर्देश दिया। याची प्रशांत कुमार ने एकेडमिक रिसोर्स पर्सन (एआरपी) के पद पर नियुक्ति के लिए अपनी उम्मीदवारी पर विचार न किए जाने को चुनौती दी थी। कोर्ट ने राज्य सरकार को निर्देश दिया कि नया विज्ञापन जारी होने पर बीटेक डिग्री को भी आवश्यक योग्यता के रूप में शामिल किया जाए ताकि किसी भी अस्पष्टता को दूर किया जा सके। बीटेक डिग्री धारक भी भविष्य में एआरपी पद के लिए पात्र होंगे।

ताले में बंद जनसुविधा, जेब में गया फंड

» ग्राम पंचायत सुरार में सामुदायिक शौचालय बना भ्रष्टाचार की नजीर

» गांव वालों ने बताया कि ग्राम प्रधान और सचिव की मनमानी से कई योजनाओं में भारी घालमेल

शिवांक अग्निहोत्री स्वराज इंडिया

कानपुर। कानपुर के कल्याणपुर विकासखंड की ग्राम पंचायत सुरार में सरकारी फंड से निर्मित सामुदायिक शौचालय महीनों से बंद पड़ा है। टिकरा से भौती जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित इस शौचालय में हमेशा ताला लटका रहता है, जिससे गुजरने वाले राहगीरों और खासकर महिलाओं को गंभीर दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि सरकार की ओर से करोड़ों रुपये स्वच्छता मिशन के तहत खर्च किए जा रहे हैं

लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही है। शौचालय की साफ-सफाई और संचालन के लिए किसी जिम्मेदार को नहीं तैनात किया गया है। लोगों ने कई बार पंचायत और संबंधित अधिकारियों से शिकायत की, लेकिन नतीजा सिर्फ आश्वासन ही रहा। शौचालय की अनुपलब्धता से महिलाएं मजबूरी में खुले में जाने को विवश हैं, जो उनकी सुरक्षा और सम्मान दोनों के लिए खतरा है।

सामुदायिक शौचालय में अरसे से बंद ताला लेकिन कागजों में हो रहा संचालन

सुरार ग्राम पंचायत में दिखावे की स्वच्छता

ग्राम प्रधान पंकज यादव और ग्राम सचिव महेंद्र गौतम इस स्थिति से पूरी तरह अवगत हैं, फिर भी अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। ग्रामीणों का आरोप है कि शौचालय के नाम पर सिर्फ कागजों में काम हुआ है, जबकि वास्तविकता में यह सुविधा कभी भी लोगों के लिए उपलब्ध नहीं रही। कई बार सफाईकर्मी की नियुक्ति और रखरखाव के लिए बजट आने की बात कही गई, लेकिन जमीन पर उसका कोई अता-पता नहीं है। ग्रामीणों ने सवाल उठाया है कि जब शौचालय आम जनता के लिए नहीं खुल रहा, तो फिर फंड कहां गया? अब लोग पंचायत पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा रहे हैं और चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही शौचालय शुरू नहीं किया गया, तो वे ब्लॉक और जिला स्तर पर विरोध प्रदर्शन करेंगे। महिला समूहों ने भी इस मुद्दे को लेकर आंदोलन की तैयारी शुरू कर दी है।

पाकिस्तान जहां खड़ा होता है, मांगने वालों की लाइन वहीं से शुरू होती है...

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पाकिस्तान को आईएमएफ़ बेलआउट पैकेज मिलने पर विभिन्न प्रतिक्रिया दी

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

नई दिल्ली। भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पाकिस्तान को आईएमएफ़ बेलआउट पैकेज मिलने पर विभिन्न प्रतिक्रिया दी है।

साथ ही रक्षा मंत्री ने कहा, "पाकिस्तान की मैं बात ही क्या करूं आपसे। और वह देश तो, मांगते-मांगते अपनी जहालत से एक ऐसी हालत में आ गया है, कि उसके बारे में यह भी कहा जा सकता है कि पाकिस्तान जहां खड़ा होता है, वहीं से मांगने वालों की लाइन ही शुरू होती है।

और अभी आपने सुना ही होगा, कि कैसे वह फिर एक बार आईएमएफ के पास कर्ज मांगने गया। और आगे उन्होंने कहा, दूसरी तरफ हमारा देश है कि हम आज उन देशों की श्रेणी में आते हैं, जो आईएमएफ को कर्ज देते हैं, ताकि आईएमएफ गरीब देशों को कर्ज़ भी दे सकें।

और राजनाथ सिंह ने जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में बादामी बाग़ छावनी में कहा है, आतंकवाद के ख़िलाफ़ हम किसी भी हद तक जा सकते हैं।

सूत्रों के अनुसार, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह जम्मू- कश्मीर में सुरक्षा हालात की समीक्षा को लेकर पहुंचे हैं।

और भारत पाकिस्तान के बीच सैन्य संघर्ष के दौरान ही आईएमएफ़ ने पाकिस्तान को बेलआउट पैकेज की एक अरब डॉलर की किश्त को भी पूर्ण मंजूरी दी थी, जिसका भारत ने कड़ा विरोध भी किया था।

अयोध्या नगर निगम में पार्क सुंदरीकरण योजना में करोड़ो का घोटाला!

स्वराज इंडिया Xक्लूसिव

- » अयोध्या नगर निगम के अफसरशाही पर उठे सवाल
- » पार्क सुंदरीकरण योजना में करोड़ों की गड़बड़ी का आरोप
- » उक्त मामले में एक दूसरे पर टाल रहे नगर निगम के जिम्मेदार

स्वराज इंडिया संवाददाता

अयोध्या। नगर निगम अयोध्या एक बार फिर भ्रष्टाचार के आरोपों के घेरे में है। इस बार मामला करोड़ों रुपये के पार्क सुंदरीकरण कार्य से जुड़ा है। एक आरटीआई के जवाब ने खुलासा किया है कि नगर निगम ने छह पार्कों के लिए मिले लगभग 4.54 करोड़ रुपये की धनराशि में पारदर्शिता नहीं बरती है।प्रकरण साकेत पुरी कॉलोनी का है, जहां नगर निगम ने सात मार्च 2024 को छह पार्कों के सुंदरीकरण के लिए टेंडर निकाले थे। परंतु एक वर्ष बीतने के बावजूद न तो सभी पार्कों में काम पूरा हुआ है, न ही उनकी खर्च की गई धनराशि की जानकारी आरटीआई के जरिए सार्वजनिक की गई।आरटीआई में केवल एक पार्क–धर्मेंद्र कुमार तिवारी के मकान के सामने–के लिए ?55.64 लाख खर्च होने की पुष्टि की गई है। बाकी पांच पार्कों पर धनराशि खर्च के जवाब में कार्य प्रगति पर है कहकर निगम ने चुप्पी साध ली है।

विवादों की जड़ बैंक के गोद लिए पार्क पर टेंडर

प्राधिकरण द्वारा भेजे गए दस्तावेजों के अनुसार, बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने वाले पार्क को बैंक ने गोद लिया था। इसके बावजूद नगर निगम ने इस पर भी ?23.69 लाख का टेंडर जारी कर दिया। बाद में जब आरटीआई के जरिए सवाल उठे तो नगर निगम ने जवाब में सुंदरीकरण से इंकार कर दिया।

» इन पार्कों के लिए मिली थी धनराशि

1. धर्मेंद्र कुमार तिवारी के मकान के सामने - 56.46 लाख
2. राजेश जायसवाल के सामने - 23.42 लाख
3. टंकी वाला पार्क, कमलाकांत तिवारी के पास - 36.56 लाख
4. संजय अग्रवाल के सामने - 18.61 लाख
5. दीपक सिंह के सामने - 13.25 लाख
6. बृजकिशोर गौड़ के सामने - 12.26 लाख

सभी फंड 31 जनवरी 2024 को चेक संख्या 41570 के माध्यम से पंजाब नेशनल बैंक से जारी कर नगर निगम को ट्रांसफर किए गए थे।

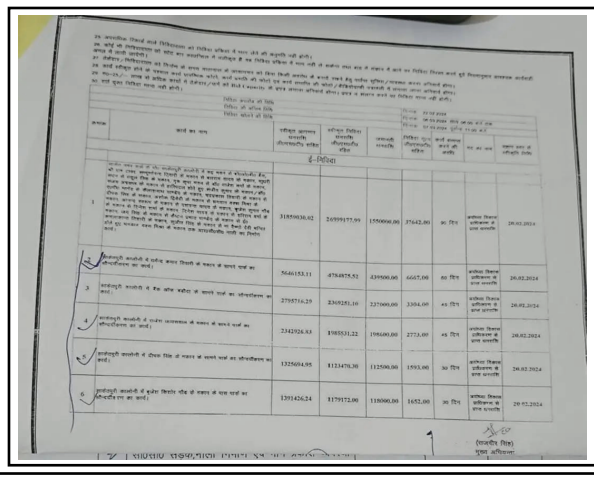

सूर्यकांत पांडेय

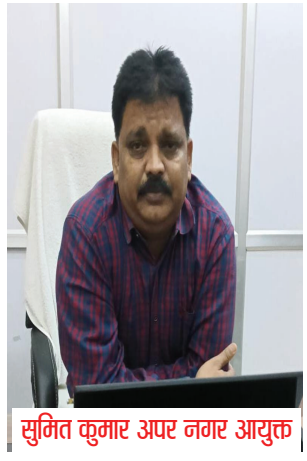

सुमित कुमार अपर नगर आयुक्त

» मामले की हो उच्च स्तरीय जांच–सूर्यकांत पांडेय

अशफाक उल्ला खां मेमोरियल शहीद शोध संस्थान के प्रबंध निदेशक सूर्य कांत पाण्डेय नगर निगम की भूमिका को संदिग्ध मान रहे हैं और उच्चस्तरीय जांच की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि सरकारी परियोजनाओं में मिले फंड के खर्च और प्रगति की सार्वजनिक जानकारी देना अनिवार्य होता है। पर यहां एक साल बाद भी कार्य पूरा नहीं हुआ और जवाब अधूरे हैं।

» प्रशासन की चुप्पी, जनता की चिंता

जब उक्त मामले में नगर निगम के अपर आयुक्त शशि भूषण राय से जानकारी चाही गयी तो उन्होंने कहा कि पार्कों का काम अपर नगर आयुक्त सुमित कुमार देखते है। जब उक्त सन्दर्भ में सुमित कुमार से संपर्क किया गया तो उन्होंने फिर शशि भूषण रॉय के ऊपर मामला टाल दिया और कहा कि सिविल का कार्य निर्माण विभाग से सम्पर्क करिये। जब हमने उक्त मामले में नगर निगम के जनसपंर्क अधिकारी मुकेश पांडेय से संपर्क किया गया तो उन्होंने कई लोगो को फोन किया लेकिन कोई सही जबाब नही मिल पाया।

इस पूरे मामले में नगर निगम की चुप्पी और जवाबों की गोलमोल भाषा से पारदर्शिता पर सवाल खड़े हो रहे हैं।